

२११

महानवमी दुर्गाचरित

विधि

3.242

ASHA ARCHIVES

मूर्ति (धुः) म (धुः) सुगयायादि ना लखयनमान नः गा
लमूर्ति यावस्ति न । नादया विष्णुसंयुक्तः शुभमृदु समन्वि
नः ॥ सुलसुक्तु सुसंयुक्तः धर्माधर्मपूठद्वय । कार्याके नः
धक कृष्णः गि सु न्य नाद विग्रह ॥ या वापययव शुद्धः धि
नस्य धम धन लु व । सर्ववर्धु धनीदवीः शुद्धगत्व गि विग्रह
म कि मूलमरु विद्धः विन्दु वीज समन्वी न ॥ अश्वी लम
रा कायः सहा वा धु वना विधी ॥ उया च विज या च वः उय

नि वा य वा जिना । उ व रू वीज म (धुः) न मूर्ति या य मा यनी
॥ वधभाक्त क वी दविः वा उ धन क या वस्ति न । रु दिनी शक्ति
मूलनः मरु विद्ध समन्वि न ॥ रु मनी रामनी (गौ वीः) मा या य
क यु वा हिनी । सु च्छन्द रं व वी दवीः सुक्ता (धुः) मरु रं व वि ॥ यं
वा गद धु वू य सः ल या रू डा यु की र्ति ना । अ मृ गा र व वू वू धः
(धुः) न म रू क या व का या वि धी शिव ॥ वू रू कि नि मरु
मा याः न म रू क न रं व वि । उ कु ल वि दू र्ति कः गाल का

कीरुयानन ४॥ नमामिददवदविः ज्वात्रधात्ररुपिणी॥
कालाम्बुवीवगदविः उमादवीनममृग ४॥ यागिनीवद्विद्या
दवीः (मेवील स्त्री सवस्यगी। हंशध्वार्द्धकद्वीः (ममूखी
गकिमालनी ४॥ काष्टकीसूतमदवीः उग्गकात्यायणी
निद्रा ४॥ निश्वकिन्नाहीनारयागाः वकाचकाकनात्यत्र। वा
स्त्रीमाहध्वीवैवः कोमावीववूवीनथ ४॥ वाजाहिचैवमा
हन्दीः वाम्बु लंरयनना। (गसित्वं हिदवविः कला

वृकविरुषिग ४॥ नुंन्दीचैवगुआ (ग्रयांः यास्यां नेमयवाम
ली। वायुयाचैवकोवैवः ०० धनसमृज्जहग ४॥ युयागव
वृक्षकोलाः अहहासाउयेनिका। वैविगुकोमकुचैवः
दवीकाटमवावृमं ४॥ जगिगाङ्गवृक्षधुः काधठमरुह
वद। कवालीलीषधधैवः सहावधैववावृम ४॥ गधका
लीउमादवीः ददवद्वीनमाश्मृग। रुडकालीमहादवीः वम
मधिरुयवह ४॥ महावृक्षमहाधनः नमस्तुगकिरुपि

ली। ह्रुद्व ४ ह्रगि ह्या हानः दया त्वं गु वृ वृषम ४॥ ज्ञानासि
नाम हामायः ७ गदि द्वा मिद दिगं । यस्ति देय ० न ह्यनः मि
सत्त्वार्थे व मानव ॥ या प्रा गि वि नि गा त्कामाः न म्ही धी रु वः
मि वं नु हं ४॥ ॥ ०० किं वि वः किं सम वल म्हा माया म्हा
समाय ४॥ ॥ ॥ वा के न द्वा य ४॥ दवा शी वी द ॥ आत्माः
शी वी द ॥ ॥ न्यास ॥ वलि (थय मग वं ॥ ॥
४ अथ को मा नी य ऊ न ४॥ को मा नी या नं सु क गा न य मा ह्ना ॥

४ अथ को मा नी य ऊ न

पा न ध वि न य ॥ म (ध्रु स को मा नी रा ॥ ह्र वि लि उ व स ४॥
का ठि लि ख व स ४॥ ह्र व न के न ४॥ व न न ॥ मि धू न ॥ ऊ न
म का ॥ ह्या न ॥ सु क गा के न ॥ क न य ना य ॥ य श्र य गा य ॥
ना सिय ॥ अ य गि न ॥ शु न म ह्का र ॥ आ स नः व लि स र्पा
गु सः थ व न ॥ ऊ वः स व गि न ॥ ॥ न्या स ४॥ अ यः अ य य ॥
य ऊ ॥ आ त्म ए न ॥ य व व लि ॥ ग य न ॥ स म य य ॥
थ व म ऊ न (थ द यू लि या य ॥ ॥ ग ना ४ को मा नी य ऊ न ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ

परकृष्णाय स्वाहा ॥ गायत्री ॥ १ ॥
यत्कालं ज्ञायमानं ॥ २ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ननु कथं कथयिष्ये गयुर्थं मयि वरुणः ॥ ३ ॥
यत्किंचिदप्युक्तं तद्दिनं सद्यः ॥ ४ ॥
कथं वाग्म्यां दक्षिणं कुलं नयालदं ॥ ५ ॥
दुर्नः ॥ ६ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
यत्किंचिदप्युक्तं तद्दिनं सद्यः ॥ ७ ॥
कथं वाग्म्यां दक्षिणं कुलं नयालदं ॥ ८ ॥
दुर्नः ॥ ९ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
यत्किंचिदप्युक्तं तद्दिनं सद्यः ॥ १० ॥

देव गच्छा गव लिय धु तु र्थ म हं स प्रद द ७ ४॥ ॥ मरुता य ॥
प धु या नित्य लु गा नि पू जा हा मा दि क र्मा णि । तु र्त्वा र व तु सा
द वि स मां स रू धि र्थ स व ४॥ य ज्ञा र्थ व ल य ४ १ ४ ॥ स य म व स
य रू वा । अ न र्त्वा यान या म श न स्मा रू व (ध व ध ४॥ ॥ पूर्व क
स रू गा पा य त्य धु उ र्म नि जा य न । स र्व पा य वि नि र्म र्कः स
ज्ज लो क सु ग रू ४॥ ॥ नुं क व धी क या म रू धि क म हा मा य
म हा रू (ज व धि का या य निः स म यु व व नः रू धि व मां स रू

क र्ण रू य नु र्त्वा हा ४॥ ॥ स्या य ४॥ मा ल रू य ४॥ म ग वि य व
न ल स ४॥ ॥ पी ग रू न म धु ल लि खि त्वा र्थ र्त्वा र्थ की रू ४॥ ॥
अ र्थ पा ग स रू द र्त्वा न का या न ग ल स हा य क ४॥ ॥ नुं क न म ४ १
क्री उ ग व धु यै स मां स रू धि र्थ रू क रू रू ४॥ ॥ म हा मा या
प द य ४॥ ॥ वा क न रू य ४॥ उ न म ४ १ ४ ॥ धि का य ४॥ श्री रू द वा
य ४॥ न म मु न म हा मा य स रू द द य वा य य । उ का कि नी वि धुः
रू मि ना दा रू य वि न्द्र मा लि नि ४॥ अ रू द हा य स म स नः अ रू स

विष्णुप्रतिष्ठा ॥ महाकृष्णलनीनिर्णयं दंसमध्वयवह्निना ॥
 सामसूर्याग्निमध्वस्तुवामयापिर्यजयत्र ॥ इंकात्रविग्रह
 वस्तुः देकावाद्यां देवपिष्ठा ॥ बालग्रहणथास्तुः जननया
 कुर्याद्यय ॥ रुकावाद्यां कवांधर्जपद्मकिंजल्कमाशिन ॥ स
 कयारव्यमहामायः वज्रदलाकपूजिन ॥ नृकेकानाग्निमध्व
 स्तुः मत्तनकेकरुदिनि ॥ अष्टविंशत्यलाधायः रुदिनिबु
 ध्नवत्तमे ॥ विन्दुल्लगानिरादवीः शुभमकुटिलाकृमि ॥ यम

विष्णुश्चन्द्रः ॥ वीरश्चन्द्रः सदाशिवः ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 : यादमूलं चन्द्रकिरा ॥ नैलाक्षं जननीदयीः नमो भगवते
 वृषिणी ॥ ॐ नृपि गलमः (ध्वजः) मृनालगनकुवृषिणी ॥
 विन्दुमः (ध्वजगंगादयीः) कटिलयाद्वचनकः ॥ गुणोत्तमकर्मिका
 रासः द्वादशनावलम्बिनी ॥ ॐ मादाद्वचनः (भोगीः) द्वादश
 दिव्यवर्चसः ॥ सूर्यसून्यानुवाचकः ॥ हंसारव्याष्टाध्विनी
 ॥ लम्बास्वोपवसदयीः दक्षिणार्कवर्गमिनी ॥ नासा (गणुस)